पाठ 2. जुम्मन का दर्द

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह बतलाना है कि बदलते समय और परिवेश में किस प्रकार तकनीकों तथा मशीनों ने हाथ के कारीगरों का स्थान लेकर उन कारीगरों के जीवन को प्रभावित किया है। मशीनों से बनी चीज़ों के बढ़ते महत्त्व एवं उपयोग ने हाथ के कारीगरों और उनके कौशलों को कमज़ोर कर दिया है। इस पाठ के द्वारा बच्चे हाथ के काम की मेहनत तथा कारीगरों के जीवन संघर्ष को समझ पाएँगे।

पाठ का सारांश

जुम्मन नाम का एक दर्ज़ी था। वह लेखक के पिता जी का पुश्तैनी दर्ज़ी था। लेखक के पिता जी को जुम्मन का काम बहुत पसंद था। जुम्मन बारहों महीने काम करते थे। लेकिन दशहरा, होली, ईद में बहुत ज़्यादा काम होता था। काम कम हो या अधिक वे कभी काम में जल्दी नहीं करते थे। गाँव में सभी जुम्मन के सगे थे। कौन कितनी सिलाई देता था, वे इसकी परवाह नहीं करते थे। ग्वालिनें उन्हें सिलाई के बदले दूध-दही देती थीं, जमींदार और किसान अनाज देते थे और कुम्हार घर की मरम्मत करवाने के लिए खपरैल देता था। शादी-ब्याह या त्योहारों के मौके पर जुम्मन बिना सिलाई लिए कपड़े सिलते थे। आठ साल बाद जब लेखक गाँव गए तो पता चला कि जुम्मन बीमार हैं। उसके बाद वे जुम्मन के घर उन्हें देखने गए तो वहाँ सब कुछ बदला हुआ था। पहले जहाँ लोगों की भीड़ होती थी आज वहाँ ऐसे खाली पड़ा था, मानो वहाँ कोई आता जाता न हो। घर के अंदर गया तो देखा कि जुम्मन एक पुरानी खाट पर पड़े थे। फिर बातचीत के दौरान जुम्मन ने बताया कि बदलते ज़माने में मशीनों के आने के बाद उनके सिले कपड़ों की कदर नहीं रही। गाँव के लोगों को जब विलायती कपड़े पसंद आने लगे तो उन्होंने हथकरघे पर तैयार कपड़े लेने बंद कर दिए। लोगों ने उनके पास आना बंद कर दिया। जुम्मन उदास होकर बताते हैं कि एक समय था जब गाँव में शादियाँ होती थीं तो उसके सिले हुए जामे-जोड़े पहनते थे, लेकिन आज शादी-ब्याह में उसे कोई नहीं पूछता। यह कहते-कहते उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पहले **पठन-पूर्व चर्चा** में दिए गए प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत करें। उसके पश्चात् पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से भी पाठ के एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। उन्हें पाठ का मूल भाव बताने को कहें। बच्चों को लघु उद्योगों से जुड़े विभिन्न कामगारों तथा उनके काम के बारे में बताएँ। उन्हें बताएँ कि कारीगरों या हमारे मददगारों, जैसे – दर्ज़ी, मिस्त्री, बढ़ई, किसान, डाकिया, माली आदि के काम का हमारे समाज में बहुत महत्त्व है। वे हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाते हैं। उन्हें यह भी बताएँ कि पुराने और नए ज़माने के बीच होने वाले बदलाव एक संघर्ष को जन्म देते हैं। उन बदलावों को अपनाकर आगे बढ़ना ही जीवन जीने की कला है।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- हाथ से कारीगरी करने वाले लोगों के जीवन-संघर्ष के बारे में चर्चा करें। जैसे– ये कामगार हमारी परंपरा और संस्कृति को जीवित रखते हैं। ये हमारे देश की अनमोल धरोहर हैं जो देश को एक विशिष्ट पहचान दिलाते हैं। लेकिन अकसर ये आर्थिक रूप से कमज़ोर होते हैं। इन्हें आजीविका संरक्षण नहीं मिलता। इनके परिवार का जीवन अभाव में ही बीतता है।
- बच्चों को बताएँ कि वर्तमान समय में मशीनों तथा तकनीकों के बढ़ते प्रयोग के कारण इन कारीगरों के काम को बढ़ावा नहीं दिया जाता।
- उन्हें बताएँ कि पुराने ज़माने में लोगों में आपसी भाईचारा और प्रेम अधिक होता था। उनसे हमें सीख लेनी चाहिए और आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।
- उन्हें यह भी बताएँ कि हमें हाथ के कारीगरों तथा उनसे जुड़े उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए।
- बच्चों से पूछें, हथकरघा उद्योगों से आप क्या समझते हैं?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।